डरना मना है

प्रेतात्मा का प्रतिशोध

हेमेन्द्र कुमार राय

अनुवादक

जयदीप शेखर

Cover Photo Credit: Image by kjpargeter on Freepik

प्रेतात्मा का प्रतिशोध

बँगला डरावनी कहानी ‘प्रेतात्मार प्रतिशोध’ का हिन्दी अनुवाद

मूल लेखक

हेमेन्द्र कुमार राय

अनुवादक

जयदीप शेखर

PREVIEW COPY

जगप्रभा

Cover Photo Credit: 3d-render-wolf-howling-moon_1857779.
Image by kjpargeter on Freepik

-: eBook :-

Pretatma ka Pratishodh: The Revange of a Spirit

Hindi translation of the Bengali horror story 'Pretatmar Pratishodh.'

Original author: Hemendra Kumar Roy (1888-1963)

Hindi translation: Jaydeep Das

(Pen name- Jaydeep Shekhar)

Copyright © 2023 Translator

Published by:

JagPrabha

Barharwa (SBG), JH- 816101

jagprabha.in | jagprabha.bhw@gmail.com

Price: ₹ 75.00

हेमेन्द्र कुमार राय

(1888 - 1963)

बँगला में किशोर-साहित्य के एक लोकप्रिय कथाकार| बाल-किशोरों के लिए सैकड़ों कहानियों एवं लघु उपन्यासों की रचना की- बड़ों के लिए भी बहुत कुछ लिखा| 1930 से 1960 के दशकों में उनकी कहानियों के बिना बाल-किशोर पत्रिकाएं अधूरी-सी लगती थीं| मुख्यरूप से उन्होंने दुस्साहसिक (Adventure), जासूसी (Detective) और परालौकिक (Supernatural), कहानियाँ लिखी हैं| कहानियों में रहस्य (Mystery), रोमांच (Thrill) और भय (Horror) का ऐसा पुट होता है कि दम साधकर कहानियों को पढ़ना पड़ता है| कुछ कहानियाँ खजाने की खोज (Treasure hunt) और वैज्ञानिक कपोल-कल्पना (Science-fiction) पर भी आधारित हैं| उनकी रची 'कुमार-बिमल' और 'जयन्त-माणिक' शृंखलाएं अपने समय में बहुत लोकप्रिय हुई थीं- पहली दुस्साहसिक कहानियों की तथा दूसरी जासूसी कहानियों की शृंखला है| उनकी रची परालौकिक कहानियों को पढ़ने का अलग ही रोमांच है|

***

प्रेतात्मा का प्रतिशोध 6
बाघ की गर्जना 6
प्रेतपर्वत 8
प्रेतपर्वत के अन्तःपुर में 13
ज्वलन्त प्रमाण दावानल 19
निशाचरी 24
प्रेतपर्वत की प्रेतात्मा 28
उपसंहार 33

प्रेतात्मा का प्रतिशोध

बाघ की गर्जना

नाचती हुई नदी में नाव बही जा रही थी। नाव ही नहीं, महानदी के बहाव में छाया, प्रकाश, चाँद और तारे भी नाच रहे थे।

नदी तट की वनभूमि से हवा बहा ला रही थी पत्तियों की सरसराहट। बहुत दूर से किसी एक चिड़िया ने मग्न होकर सुरीली तान छेड़ रखी थी।

जंगल के बीचों-बीच एक बड़े पहाड़ की धुंधली आकृति उभरी हुई दिखायी पड़ रही थी। जैसे, उस स्थान पर धरती अपनी तृणशैया से सिर उठाकर कौतूहलवश प्रकृति की साज-सज्जा को एक बार निहार लेना चाहती हो।

नाव चला रहे थे दो मित्र- प्रमोद एवं प्रफुल्ल। किसी की उम्र पच्चीस-छब्बीस से ज्यादा नहीं थी। दोनों अक्सर इसी तरह शौक से नाव लेकर निकल जाया करते थे।

सन्ध्या शनैः-शनैः रात्रि की कालिमा में खो गयी। कहीं किसी प्राणी की आहट नहीं थी, केवल जंगल की मर्मरध्वनि और नदी का कलकल सुनायी पड़ रहा था।

नाव चलाना छोड़ दोनों हाथ-पाँव फैलाकर लेट गये। नीरवता के साथ कुछ पल वे नीले आकाश में तारका-सभा के सभापति चाँद को देखते रहे।

प्रफुल्ल बोला, "प्रमोद, एक गाना सुनाओ।"

प्रमोद ने जवाब नहीं दिया।

प्रफुल्ल ने फिर कहा, "यह रात बहुत अच्छी लग रही है। तुम एक गाना सुनाकर इसे और भी सुन्दर बना दो।"

प्रमोद दीर्घश्वास छोड़कर बोला, "गाना गाने का मन नहीं कर रहा।"

"क्यों?"

"ऐसा लग रहा है कि एक घोर अमंगल मुझसे मिलने की कोशिश कर रहा है।"

प्रफुल्ल कौतुक से हँस पड़ा।

प्रमोद बोला, "तुम हँस रहे हो?"

"इतनी सुन्दर रात है, चाँदनी फैली हुई है, नदी कलकल गा रही है और तुम इनके बीच किसी अमंगल को खोज रहे हो?"

"मैं नहीं खोज रहा प्रफुल्ल, अमंगल ही मुझे खोज रहा है। मैं तो मानो आँखों के सामने ही परलोक का सिंहद्वार देख पा रहा हूँ।"

कुछ पल चुप रहकर प्रफुल्ल बोला, "भाई प्रमोद, तुम्हारे मुँह से अक्सर इस तरह की बातें सुनता हूँ। इसका कारण क्या है, बोलो तो?"

"दोस्त, बिना किसी कारण के कोई अमंगल का ध्यान नहीं करता।"

"अमंगल का ध्यान?"

"हाँ, अभी अमंगल ही है मेरी एकमात्र ध्यान-धारणा।"

"तुम पागल हो गये हो।"

"यदि तुम मेरे जीवन की कहानी जानते, तो मुझे पागल कहने से पहले सोचते।"

"तुम्हारी यह बात जँच नहीं रही।"

"क्यों?"

"अपने जीवन को तुमने खुद रहस्य के आवरण से ढाँप रखा है। कई बार मैंने तुम्हारे बारे में जानना चाहा है, लेकिन क्या तुमने कभी मुझे अपने बारे में बताया?"

प्रमोद धीरे-धीरे उठकर बैठ गया। इसके बाद धीरे-धीरे ही वह बोला, "मैंने अपने बारे में तुम्हें क्यों नहीं बताया- यह तुम जानते हो?"

"मैं कैसे जान जाऊँगा- बोलो? मैं कोई ज्योतिषी तो हूँ नहीं।"

"मेरे जीवन की कहानी अलौकिक है।"

"अलौकिक?"

"अलौकिक या अपार्थिव। सुनकर तुम विश्वास नहीं करोगे।"

"तुम मेरे सबसे करीबी दोस्त हो और मैं तुम्हारी बातों पर विश्वास नहीं करूँगा?"

"केवल अलौकिक ही नहीं, मेरे जीवन की कहानी भयंकर है! रोमांच से तुम्हारे रोंगटे खड़े हो जायेंगे! हो सकता है कि तुम अन्त तक सुन ही न पाओ!"

प्रफुल्ल हक्का-बक्का रहकर कुछ पलों तक प्रमोद के चेहरे की तरफ देखता रह गया। फिर वह उठकर हँसते हुए बोला, "दोस्त, जीवन बहुत ही एकरस है, लेकिन तुम्हारी बातों में एडवेंचर की गन्ध है। रोमांच से रोंगटे खड़े हो जाना मुझे

पसन्द है। इस पार्थिव जगत में बैठकर ही किसी अपार्थिव जगत का अनुभव हो जाय- लगता है, यह भी अच्छा ही लगेगा! अच्छी बात है, शुरू करो अपनी जीवन-कहानी!"

दूधिया चाँदनी में नहायी नदी के बहाव में नाव अपने-आप बही जा रही थी। एकाएक हवा का बहना ठहर गया, जंगल से आती मर्मर ध्वनि थम गयी; नदी का कलकल भी क्षीण हो गया और इस निस्तब्धता के बीच कहीं से किसी रक्तपिपासु व्याघ्र की भयंकर गर्जना सुनायी पड़ी।

सिहर कर प्रमोद बोला, "सुना?"

"क्या?"

"कहीं से बाघ गरज रहा है- "

"गरजने दो! इससे हमें क्या?"

"कुछ नहीं। विश्वास करो या न करो, सुनो तब मेरी कहानी।"

प्रेतपर्वत

हम लोग जब आसाम के एक जंगल में रहते थे, तब की बात ही मैं विस्तार से बताऊँगा, लेकिन हमारा मूल निवास बँगाल में था- चौबीस परगना जिले में। जिस कारण से हमें अपना गाँव छोड़ना पड़ा था, वही बात पहले बताता हूँ।

भाई-बहन हम तीन थे- भैया, मैं और माया। पिताजी बहुत धनी न होने पर भी लाख रुपये के मालिक थे! उसी के सूद से स्वछन्द गति से हमारा संसार चल रहा था।

माया के जन्म के समय मेरी माँ का देहान्त हो गया था। पिताजी परम हिन्दू थे, माँ को बचाने के लिए उन्होंने बहुत-से देवी-देवताओं के सामने माथा टेका था, लेकिन उन देवी-देवताओं ने मोटी रकम का प्रसाद खाकर भी माँ को बचाने की थोड़ी-सी भी कोशिश नहीं की थी।

इसके परिणामस्वरूप पिताजी हिन्दू देवी-देवताओं के नाम सुनते ही क्रोध से आग-बबूला हो उठते थे। साथ ही, माँ के शोक में पिताजी का मस्तिष्क भी शायद थोड़ा विकृत हो गया था। कारण जो भी हो, पिताजी ने अचानक से ईसाई धर्म अपना लिया।

ऐसे मामलों में बँगाल के ग्रामीण समाजों में कैसी प्रतिक्रिया जन्मती है- यह शायद तुम्हें समझाने की जरुरत नहीं है। केवल पड़ोसी ही नहीं, गाँव के जमीन्दार तक नाराज हो गये। चारों तरफ से हिकारत भरी नजरें उठने लगीं और अपशब्द कहे जाने लगे।

एक दिन जमीन्दार के घर से पिताजी का बुलावा आया। वहाँ क्या तमाशा होगा- इसका अनुमान करके पिताजी घर में बैठे रह गये।

क्रुद्ध जमीन्दार ने उसी दिन शाम को एक लठैत दरबान को घर भेज दिया।

पिताजी बाहर वाले कमरे में बैठे हुए थे। सीधे कमरे में घुसकर दरबान ने बताया कि उसे हुक्म मिला है कान पकड़ कर पिताजी को ले जाने का।

पिताजी ज्यादा नहीं बोलते थे। संक्षेप में ही बोले, "एक बार वह कोशिश करके देख ही लो न।"

कोशिश करने में दरबान ने दुविधा नहीं दिखायी। पिताजी का कान पकड़ने के लिए उसने हाथ बढ़ाया, लेकिन पिताजी ने हाथ बढ़ाया उससे भी तेजी से। दरबान की लाठी छीनकर उसके सिर पर वार कर दिया।

बिना किसी आवाज के दरबान लम्बलेट हो गया। पलक झपकते उसके प्राण-परखेरू उड़ गये।

ऐसी दुर्घटना घट सकती है- पिताजी ने इसकी कल्पना भी नहीं की थी। दरबान की हत्या करने का उनका इरादा बिलकुल नहीं था।

विपत्ति में पड़कर पिताजी ने बुद्धि नहीं खोयी। बहुत ही जरूरी चीजों को उन्होंने समेटा और किसी को खबर होने से पहले ही अन्धेरे में वे हमें लेकर गाँव छोड़कर निकल गये।

इसके बाद पुलिस की नजरों से बचते हुए पिताजी ने किस तरह से आसाम के जंगलों के बीच अपना ठिकाना बनाया- यह घटनाक्रम रोमांचक होने पर भी विस्तार से यहाँ बताने की आवश्यकता नहीं है।

अपने देश में प्रायः सभी जंगलों के अन्दर ऐसे बहुत-से लोग वास करते हैं, जो शिकारी के रूप में अपना परिचय देते हैं। शिकार करना ही उनका पेशा होता है! पिताजी ने क्या कहकर आत्मपरिचय दिया था- यह तो मैं नहीं जानता, पर मुझे लगता है कि स्वयं को उन्होंने शिकारी ही बता रखा था।

जब हम आसाम के जंगलों में आये, तब मैं छोटा ही था, सारी बातें ठीक से याद नहीं हैं।

चार कमरों वाली बड़ी कुटिया खड़ी कर पिताजी ने अपना ठिकाना बनाया। वहाँ से नजदीकी मानव-बस्ती कई मील दूर थी। बहुत जरूरी न होने पर पिताजी उस तरफ कदम नहीं बढ़ाते थे। हमारे पास गायें थीं, बकरियाँ थीं और बत्तखें-मुर्गियाँ भी थीं। कुटिया के पीछे थोड़ी-सी जमीन घेरकर उसे शाक-सब्जियों का बागान बना लिया गया था। चावल-दाल आदि दूर के बाजार से आते थे। पिताजी रोज सुबह बन्दूक लेकर जंगलों में निकल जाते थे शिकार के लिए। अक्सर चिड़िया या हिरण मारकर लाते थे। अतः समझ ही सकते हो कि जंगल के अन्दर रहते हुए भी हमारे लिए खाने-पीने का कोई अभाव नहीं था।

उस जंगल की छवि आज भी मेरे मन में अंकित है। एक ही साथ वह अपूर्व, विचित्र और भयावह था! सुन्दर के साथ भीषण का ऐसा सम्मिलन मैंने फिर कहीं नहीं देखा।

हमारी झोपड़ी के पास ही घास एवं झाड़ियों से भरी जमीन का एक टुकड़ा था और उसके बाद एक छोटी-सी नदी थी। साल के ज्यादातर समय वह नदी रेत के बिछावन पर पतली जलरेखा बनकर कल-कल बहती थी- तब उसका गान मृदु गुंजन के समान होता था, लेकिन वर्षाकाल में उसका रूप रौद्र हो जाता था! तब